सुरजीत मान जलईया सिंह

मानवीय संवेदनाओं के अद्भुत गीतकार: धीरज श्रीवास्तव

हिन्दी साहित्य का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि हर युग में ऐसे कवि और गीतकार सामने आते रहे हैं, जिन्होंने समाज के हृदय की धड़कनों को शब्दों में ढालकर नई ऊर्जा दी। कवियों की परंपरा में एक नाम है धीरज श्रीवास्तव, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा, उसकी आकांक्षाएँ और उसकी उम्मीदों को स्वर प्रदान किया। धीरज श्रीवास्तव के गीत केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं हैं, बल्कि वे लोक जीवन की संवेदनाओं का दर्पण भी हैं। उनकी रचनाओं में हमें गांव का जीवन, किसान का संघर्ष, मां का वात्सल्य, भाईचारा, गरीबी की विवशता और सामाजिक विषमताएँ सभी स्पष्ट दिखाई देते हैं। गीतों की परंपरा में वे उन रचनाकारों में से हैं जिन्होंने सरल भाषा, सहज बिंब और हृदयस्पर्शी भाव के माध्यम से पाठक और श्रोता के मन को गहराई तक प्रभावित किया। मेरा परिचय धीरज जी से लगभग 15 वर्ष पुराना है, मेरे प्रथम काव्य संग्रह माँ का आँचल के संबंध में मेरी मुलाकात धीरज जी से हुई, उस वक्त तक मेरा लेखन एक सामान्य भाव बोध लिए हुए था, जिसमें एक नवोदित साहित्यकार के सिर्फ अपने विचारों से परे साहित्य का कोई रूप नहीं था। धीरज जी ने फिर भी मेरे लेखन की प्रसंसा कर मेरा मन जीत लिया, और मुझे समय-समय पर लिखने के लिए प्रेरित करते रहे। धीरज जी के गीत पढ़ते ही वह मेरे हृदय को छू जाते मन आनंद के मानसरोवर में गोते लगाने लगता। समय का पहिया चलता रहा और मुझे प्रेरणा मिलती रही, और इसी बीच धीरज जी ने एक साहित्य कार्यक्रम हेतु मुझे मनकापुर आने का आमंत्रण दे डाला। मेरे लिए यह इस तरह की पहली यात्रा थी। मनकापुर रेल्वे स्टेशन पर उनके जी द्वारा भेजे उनके सहयोगी जे पी पचौरी जी से मुलाकात हुई और वो मुझे सीधे उनके घर ले गये। हम तीन दिन तक साथ रहे जिस दौरान मैंने धीरज

जी के व्यक्तित्व की वह सरलता जानी जो वास्तविक साहित्यकार को गीत सृजने की ताकत देती है। आज भी उनका वही प्रेम मेरे ऊपर सदैव बरसता है।

1 सितम्बर 1974 को जन्मे धीरज श्रीवास्तव जी का जीवन ग्रामीण परिवेश से जुड़ा हुआ था, इसलिए उनके गीतों में गाँव की माटी की गंध और आम जन की बोली का असर स्वाभाविक रूप से दिखाई देता है। धीरज जी ने अपने गीतों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण बखूबी किया है, आपके गीतों का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि वे समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उनके गीतों में गरीबी, संघर्ष, भूख, परिवार की पीड़ा और इंसानी रिश्तों की सच्चाई झलकती है। भावनात्मक गहराई पर जब इनके गीत उतरते हुए गहरी संवेदनाओं को छूते हुए माँ, पिता, भाई, गाँव और मजदूर जीवन तक की एक वास्तविक यात्रा हमें करा देते हैं।

इनके गीतों में सहज और सरल भाषा का प्रयोग है, अलंकारिक और जटिल भाषा का प्रयोग कम करते हैं। उनकी भाषा सरल, बोलचाल की और आत्मीय है, जिससे उनके गीत सीधे हृदय को स्पर्श करते हैं। मानवीय करुणा, मानव जीवन के दुख-दर्द, हँसी-खुशी और करुणा को उन्होंने अपने गीतों में गहराई से महसूस किया और लिखा।

आपके गीतों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

गरीबी और संघर्ष उनके गीत "कैसे मैं पैबंद लगाऊँ" में गरीब की विवशता का अत्यंत मार्मिक चित्रण है।

"कैसे मैं पैबंद लगाऊँ, जीवन की चीर-फाड़ पर..."

यह गीत एक आम आदमी की असमर्थता और जीवन संघर्ष का प्रतीक है। परिवार और मातृत्व गीत "मुझको नींद नहीं आती माँ" में माँ के प्रति पुत्र का भावुक दृष्टिकोण है। यह गीत न केवल मातृत्व का चित्रण करता है, बल्कि जीवन की थकान

और आश्रय खोजने की प्रवृत्ति को भी व्यक्त करता है।

गांव का जीवन

उनके गीतों में गाँव के दृश्य, भाईचारा और सादगी मिलती है। जैसे “लौट शहर से आते भाई” में ग्रामीण जीवन की आत्मीयता झलकती है।

मानवीय संबंध और संवेदनाएँ

गीत “मन का है विश्वास” आशा और आत्मविश्वास से भरा है। इसमें व्यक्ति की आंतरिक शक्ति और ईश्वर पर भरोसे की भावना स्पष्ट है।

दार्शनिक दृष्टि

कुछ गीतों में जीवन के गहरे प्रश्नों का उत्तर खोजने की प्रवृत्ति है। “गीत कुँवारे” इसी श्रेणी का गीत है, जो अस्तित्व और बंधन के बीच के द्वंद्व को अभिव्यक्त करता है।

इन गीतों में ग्रामीण जीवन की गंध, गरीबी का संघर्ष, मानवीय संबंधों की ऊष्मा और अस्तित्व का द्वंद्व सबकुछ झलकता है।

धीरज श्रीवास्तव के गीतों को पढ़ते समय यह महसूस होता है कि वे न तो केवल साहित्यकार हैं, न ही केवल कलाकार—बल्कि वे एक संवेदनशील मानव हैं, जो अपने समय और समाज के दुख-दर्द को अपने भीतर जीते हैं और फिर उसे गीत का रूप देते हैं।

आपने अपने गीतों के माध्यम से आधुनिक हिन्दी साहित्य को नए जीवन-संस्पर्श दिए। आपकी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संवेदना और समाज परिवर्तन का माध्यम भी है।

आप उन गीतकारों में शामिल हैं, जिन्होंने अपने लेखन से लोक जीवन और साहित्य के बीच की दूरी मिटाई। धीरज श्रीवास्तव का गीत-संसार हिन्दी साहित्य में एक सशक्त उपलब्धि है। उन्होंने अपनी रचनाओं में लोकजीवन, संघर्ष, गरीबी, परिवार, मातृत्व और अस्तित्व जैसे शाश्वत विषयों को गहराई से व्यक्त किया।

उनकी सरल भाषा और आत्मीय शैली ने उन्हें आम जन के करीब ला दिया। उनकी रचनाएँ नवोदित गीतकारों के लिए प्रेरणा श्रोत हैं ।